आरोग्यम् सुख सम्पदा

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रायपुर

ALL INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES, RAIPUR

आरोग्यम्
अंक-2, जनवरी-मार्च 2020

AROGYAM
ISSUE-2, JAN-MAR 2020

आरोग्यम् सुख सम्पदा

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रायपुर

ALL INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES, RAIPUR

VANDANA PRINTERS AND SUPPLIERS - 9425209840

जनसंपर्क विभाग, अ.भा.आ.सं. द्वारा आंतरिक और बाह्य संचार के लिए प्रकाशित प्रसारित
Published by P.R. Office, AIIMS, Raipur For Internal and External Communication

Focus on Research and Development for Patient Care

Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director, AIIMS addressing employees during 71st Republic Day Celebrations

Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director, AIIMS felicitating best performer employees.

Raipur, 26 January, 2020

All India Institute of Medical Sciences Raipur has celebrated 71st Republic Day with patriotic fervor. Cultural programmes by students and colorful parade by security guards marked the celebrations. Best performers in the Hospital management and administration were felicitated by AIIMS.

Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director, AIIMS unfurled the tricolor flag. While remembering the contribution made by freedom fighters in attaining the freedom and remarkable contribution made by army jawans to provide safe and secure environment in the Country, Prof. Nagarkar urged everyone to make contribution for national development.

'21st Century belongs to Asia. Our demographic conditions and youth energy will be decisive, it will play pivotal role in world affairs', he said.

'With collective efforts by medical, technical, non teaching employees and students, AIIMS has achieved a distinctive place in Chhattisgarh and nearby states. Now we should focus on world class research and development projects. Dedicated efforts are needed to achieve newer heights in patient care and new treatment protocols. We should maintain high standards in our public and professional life. AIIMS will certainly become a center of excellence in medical treatment and education in coming years', he added.

Superintendent Dr. Karan Peepre and Deputy Director (Admin.) Neeresh Sharma and Dr. Mrithunjay Rathore felicitated the best performing employees in different categories including Kayakalp movement for cleanliness. Medical students performed different cultural activities in the programme. Dr. Ekta Khandelwal conducted the programme.

*****

- AIIMS Celebrated 71st Republic Day with Patriotic Fervor
- Best Performer were Felicitated by the Management

School Children Performing Yoga Asanas During the programme

गरीब मरीजों के जीवन की निधि बनी 'अर्पण'

- कंपनियों, एम्स के चिकित्सकों और कर्मचारियों एवं समाजसेवियों ने दिया योगदान
- बिहार के शेख करीम सहित कई मरीजों को मिला लाभ
- गरीबों को एक लाख रूपये तक की सहायता देता है एम्स

रायपुर, 29 जनवरी, 2020

बिहार स्थित सिवान के शेख करीम (बदला हुआ नाम) 65 वर्ष के हैं। उन्हें यूरिनरी ब्लाडर में कैंसर था। इलाज के लिए अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान आए परंतु स्वयं के इलाज के लिए पैसा नहीं था। यह किसी सरकारी स्वास्थ्य योजना के लाभार्थी भी नहीं थे ऐसे में स्वस्थ्य जीवन का सपना अधूरा लगने लगा था। ऐसी परिस्थिति में एम्स प्रबंधन आगे आया और स्वयं की 'अर्पण' निधि से करीम के इलाज के लिए तीस हजार रुपये उपलब्ध कराए गए। करीम अब स्वस्थ जीवन की तरफ बढ़ रहे हैं मगर इसके लिए वे एम्स के बहुत आभारी हैं।

यह सिर्फ शेख करीम की कहानी नहीं है। एम्स में इलाज के लिए प्रतिदिन आने वाले तीन हजार रोगियों में कई ऐसे भी होते हैं जो स्वयं के इलाज का खर्च तक नहीं उठा सकते। करीम को डॉ. दीपक कुमार बिस्वाल और डॉ. अमित ने चिकित्सकीय समाज सेवा अधिकारी सौरभ धस्माना की मदद से एम्स द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान की गई।

एम्स के सामने प्रतिदिन ऐसा यक्ष प्रश्न रहता है कि ऐसे मरीजों का क्या किया जाए। सीमित संसाधनों की वजह से सभी मरीजों को मुफ्त में इंप्लांट और दवाइयां नहीं दी जा सकती। वहीं गंभीर रूप से बीमार मरीजों को एम्स से ठीक किए बिना भी नहीं भेजा सकता है मगर बिना संसाधनों के इनका इलाज कैसे किया जाए।

ऐसे मरीजों की सहायता करने के लिए जो किसी सरकारी योजना के दायरे में नहीं आते हैं और बेहद गरीब हैं, एम्स में 'अर्पण' निधि बनाई गई है। यह गैर सरकारी निधि है जिसके लिए पृथक बैंक एकाउंट खोला गया है जिसमें पीएसयू कंपनियां अपने सीएसआर फंड से दान दे सकती हैं। इसके अलावा एम्स के चिकित्सक और कर्मचारी भी अपने वेतन का एक हिस्सा इसमें दान देने के लिए आगे आए हैं। समाजसेवी भी इसमें पीछे नहीं है।

बिहार के सीवान निवासी शेख करीम एम्स में अपर्ण निधि के अंतर्गत स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हुए।

इस निधि की मदद से मरीजों को एक लाख रूपये तक की सहायता प्रदान की जा रही है। इस योजना का फायदा अब तक कई मरीज उठा चुके हैं।

चिकित्सक और चिकित्सा समाज सेवा अधिकारी मिलकर ऐसे रोगियों की पहचान करते हैं जिन्हें इस निधि की अत्याधिक आवश्यकता है। उनकी अनुशंसा पर चिकित्सा अधीक्षक 40 हजार रूपये तक की सहायता दे सकते हैं। यदि मरीज की स्थिति गंभीर है तो एम्स प्रबंधन की अनुशंसा पर उसे अधिकतम एक लाख रूपये की सहायता एक वर्ष में दी जा सकती है।

निदेशक प्रो. (डॉ.) नितिन एम. नागरकर ने कहा है कि यह निधि कई मरीजों के जीवन को बचाने के लिए लाइफ लाइन का कार्य कर रही है। एम्स का प्रयास है कि उम्मीदों के साथ देशभर से आने वाले मरीजों को स्वस्थ करके भेजा जाए। इसके लिए संसाधनों की कोई कमी नहीं आने दी जाएगी।

उप–निदेशक (प्रशासन) नीरेश शर्मा का कहना है कि कई पीएसयू और बैंकों ने अपने सीएसआर फंड से 'अर्पण' के लिए योगदान दिया है। अभी भी कई कंपनियां इसमें रूचि प्रदर्शित कर रही हैं। उन्होंने सभी समाजसेवियों का आह्वान किया है कि वे इस निधि में स्वयं का योगदान दे गरीबों की जिंदगी बचा सकते हैं।

चिकित्सा अधीक्षक डॉ. करन पीपरे ने कहा है कि समाज के सक्षम वर्ग को ऐसे मरीजों की सहायता के लिए आगे आना चाहिए।

*****

Relief for Patients, New Ward for General Medicine Dept

With 90% Bed Occupancy, General Medicine Department Equipped with New Facilities

Raipur, 01 January 2020

New Ward in General Medicine Department of All India Institute of Medical Sciences was inaugurated on new year The new ward will give immediate relief to the increasing number of patients in the department. With ventilator and oxygen facilities, the new ward can serve scores of patients as their waiting time will be reduced.

Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director, AIIMS inaugurated the new ward at Second Floor in D-block. The department was witnessing increased number of patients since last several months. Some patients have to wait till old patients get discharged. Due to steady increase in patients, AIIMS management has decided to provide new ward to the department. 'AIIMS is continuously increasing its capacity to serve the patients. New ward with separate male and female ward is another step in this direction.

Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director, AIIMS inaugurating new ward in General Medicine Department, AIIMS.

We are hopeful that new year 2020 will give big relief to the patients coming to AIIMS with new hope', Prof. Nagarkar said.

According to Dr. Karan Peepre, Medical Superintendent 'General Medicine Department has 60 beds, ICU, HDU and Emergency facility. Total 90 beds are available for the patients with 90% bed occupancy. We need some more facilities to address growing numbers of patients in the department. New ward will reduce the pressure on the department', he assured. New ward has 24 bed capacities each for men and women patients.

Around 150 to 175 patients are coming everyday in the OPD including Diarrhea, Malaria, Renal disease, Fever, Viral etc affected patients. OPD of the Department registered 3700+ patients in December, 2019 alone. Some of them in critical condition need immediate medical attention. New ward is equipped with oxygen and other medical care facilities patients generally need. Inauguration was attended by Deputy Director (Admin.) Neeresh Sharma, Dr. Vinay R. Pandit, Dr. Manoj Parashar, Dr. Preetam Narayan Wasnik, Shri B.K. Agrawal, Financial Advisor and other faculty members and officers of AIIMS.

*****

Medical Students took Hippocratic Oath, Will Serve the Society with Scientific Knowledge

Raipur, 01 January, 2020

Medical Students from 2015 Batch in All India Institute of Medical Sciences has celebrated their new year with Hippocratic Oath. They swear to learn lifelong and to devote their life to improve of human health and society welfare with all means. Their oath ceremony was witnessed by a large gathering of doctors and other medical students.

All the students from 2015 was gathered at AIIMS campus. Under the supervision and guidance of Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director, AIIMS, Prof. Suryaparakash Dhaneria, Dean (Academics), Dr. Alok Agrawal and Registrar Dr. Nitin Gaikwad the oath ceremony was held. Buddy medicos took oath to respect scientific gain made by senior doctors, take their help in critical cases without hesitation, respect privacy of patients and try to prevent disease whenever needed.

The ceremony was attended by Medical Superintendent Dr. Karan Peepre, Dr. Ramanjan Sinha, Dr. Narendra Kuber Bodhey, Dr. Anil Goel, Dr. Debajyoti Mohanty, Dr. Ujjawala Gaikwad and Dr. Preetam Narayan Wasnik. Dr. Tushar Jagzape welcomed all the guests.

*****

बाल रोग विभाग में 60 बैड का वार्ड जन्म से मिलेंगी अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाएं

- 60 बैड की पीडियाट्रिक वार्ड यूनिट का उद्घाटन हुआ
- आठ बैड की एचडी यूनिट होगी गंभीर रूप से बीमार बच्चों के लिए
- नियोनेटोलाजी में 20 बैड पहले से ही उपलब्ध हैं विभाग में

रायपुर, 17 मार्च, 2020

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान रायपुर में नवजात शिशुओं के लिए 60 बैड क्षमता का बाल रोग विभाग का वार्ड प्रारंभ हो गया है। अब समय से पूर्व जन्म लेने वाले शिशुओं या किसी भी प्रकार के रोग का शिकार बच्चों को इंटेसिव केयर आसानी के साथ उपलब्ध हो सकेगी।

एम्स का बाल रोग विभाग संस्थान के उन विभागों में शामिल है जहां सबसे अधिक रोगी ओपीडी और आईपीडी में पहुंच रहे हैं। यहां समय पूर्व जन्म लेने वाले शिशुओं की संख्या अधिक है जिसकी वजह से लंबे समय से हाई डिपेंडेंसी यूनिट (एचडीयू) और पृथक वार्ड की जरूरत महसूस की जा रही थी। बीमार शिशुओं की बढ़ती संख्या को देखते हुए अधिक बैड वाले वार्ड की जरूरत महसूस की जा रही थी।

इसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए मंगलवार को सी ब्लॉक के प्रथम तल पर निदेशक प्रो. (डॉ.) नितिन एम. नागरकर ने बाल रोग विभाग के 60 बैड क्षमता वाले वार्ड का उद्घाटन किया। इस अवसर पर चिकित्सा अधीक्षक डॉ. करन पीपरे, बाल रोग विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल गोयल और वित्त सलाहकार बी.के अग्रवाल भी उपस्थित थे।

वार्ड वर्तमान आवश्यकताओं को देखते हुए बनाया गया है जिसमें आइसोलेशन वार्ड भी शामिल है। यहां दीवारों पर बच्चों के लिए खूबसूरत पेंटिंग भी की गई हैं जिसमें मिकी माउस और लोकप्रिय कार्टून शामिल हैं।

आठ बैड की क्षमता वाले एचडीयू में समय से पूर्व जन्म लेने वाले या गंभीर बीमारी के शिकार शिशुओं का इलाज किया जाएगा। इसके अलावा छह बैड पीडियाट्रिक आंकेलॉजी (कैंसर का शिकार शिशुओं) के लिए होंगे। विभाग में पहले से ही 20 बैड का नियोनेटोलॉजी वार्ड मॉली डॉ. फाल्गुनी पाढ़ी के निर्देशन में कार्य कर रहा है। इस प्रकार अब बाल रोग विभाग में शिशुओं से लेकर बच्चों तक के लिए 80 बैड की क्षमता का वार्ड उपलब्ध हो गया है। ऐसे में अब विभाग को चिकित्सा के लिए अन्य विभागों पर निर्भर नहीं रहना होगा।

उद्घाटन कार्यक्रम में विभाग के वरिष्ठ चिकित्सकों डॉ. सुनील जोंधाले, डॉ. तुषार जगजापे, डॉ. तृप्ति नायक, डॉ. मानस, डॉ. वरूण, डॉ. संतोष और डॉ. अतुल जिंदल ने भी भाग लिया।

Patients Regain Hearing Capacity in AIIMS, Thanks to Cochlear Implant Surgery by ENT Dept

- **Auditory Verbal Therapy or Speech and Language Therapy to Patients for better Communication**
- **Early Detection and Follow-up treatment Can Significantly Improve Hearing Capacity**

Raipur, 27 February, 2020

The ability to hear and communicate is essential for quality of life. But sometimes due to some disease patients lost their hearing capability. Early detection, diagnosis, treatment and rehabilitation of such patients has become a challenge for the family members. All India Institute of Medical Sciences Raipur is giving a new lease of life to such patients through its expert cochlear implant surgery.

Case One- Seven year Ajay (name changed) from Bemetara (Chhattisgarh) lost hearing at the age of three year due to meningitis. After getting treatment from various local doctors he was referred to ENT department in AIIMS Raipur. Detailed examination of the patient found that Ajay can gain his hearing capability through cochlear implant surgery. Surgery, implant and rigorous Auditory Verbal along with Speech and Language Therapy have been given to him under the expert guidance of Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director and HoD, ENT Department, AIIMS Raipur. Now, Ajay is communicating the rest of the world with his full ability. His parents never forget to mention ENT department in AIIMS for his another wonderful life.

Case Two- Manoj (25 Years) (Name Changed) was working with STF in Chhattisgarh. He lost hearing at the age of 22 years due to cerebral malaria. Cochlear Implant Team in AIIMS Raipur suggested a surgery. Following the surgery and three months rigorous auditory training in AIIMS, Manoj once again hear every sweet voice of the world. Now, he is successfully working with the STF.

There are several Ajay and Manoj, coming into ENT Department OPD every day. Name may be different and cause may be other but they have the same problem-hearing loss. According to Prof. Nagarkar 19% of the disabled population (As per 2011 census) suffering from hearing loss due to preventable or unpreventable causes. Disability among children aged between 0 to 6 years is more serious concern as 23% of them having hearing problem.

To regain the hearing loss and to implant, AIIMS has been performing ear surgery on a regular basis. Most of them are undergoing cochlear implant surgery. It costs less and can give more results. After surgery, patients have to undergo some sort of therapy-Auditory Verbal Therapy or Speech and Language Therapy. It helps patients to communicate more conveniently with the rest of the world.

According to Prof. Nagarkar around 250 patients visiting ENT OPD everyday in AIIMS Raipur, most of them have hearing loss problem in advance stage. 'Early intervention and awareness is needed to prevent hearing loss. Sooner hearing loss is recognized, the sooner improved communication begins. AIIMS Raipur is dedicated to providing expert testing, counseling and follow-up care for hearing impaired patients based on their individual needs', he added.

(Name of patients have been changed to hide their identity)

Patron
Prof. (Dr.) George A. D'Souza
President
AIIMS Raipur
Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar
Director and CEO
AIIMS, Raipur

Mentor
Shri Neeresh Sharma
Deputy Director (Admin.)
AIIMS Raipur

Editor
Shiv Shankar Sharma
Pubic Relations Officer

Members
Syeed Shadab
Umesh Pandey
Aditya Shukla
Abhishekh

कानों पर न करें असुरक्षित प्रयोग, सुनने की क्षमता पर पड़ सकता है प्रभाव

- एम्स के चिकित्सकों ने स्कूली बच्चों के कानों का किया परीक्षण
- छात्रों और अभिभावकों को बनाया जागरूक, कई कार्यक्रम आयोजित

एम्स रायपुर के निदेशक प्रो. नितिन एम. नागरकर कोटा के प्राथमिक स्कूल में छात्रों के साथ

रायपुर, 03 मार्च 2020

विश्व श्रवण दिवस पर अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के ईएनटी विभाग का एक दल कोटा स्थित नवीन शासकीय प्राथमिक शाला पहुंचा। यहां चिकित्सकों ने छात्रों के कानों की जांच की और उन्हें विश्व श्रवण दिवस पर स्वयं के कान को स्वस्थ रखने के बारे में जागरूक बनाया। इस अवसर पर छात्रों और अभिभावकों का आह्वान किया गया कि वे कानों में कोई भी असुरक्षित चीज का प्रयोग न करें नहीं तो यह जीवनभर के लिए सुनने की क्षमता को प्रभावित कर सकता है।

एम्स रायपुर के निदेशक और ईएनटी के विभागाध्यक्ष प्रो. (डॉ.) नितिन एम. नागरकर के निर्देशन में पहुंची चिकित्सकों की टीम ने लगभग 45 बच्चों के कानों का चेकअप कर उनके सुनने की क्षमता को परखा। क्लास में पीछे बैठने वाले छात्रों से भी सुनने की समस्या के बारे में जानकारी ली गई। इस दौरान शिक्षकों की भी काउंसलिंग कर उन्हें कम सुनने वाले छात्रों को दी जाने वाली अतिरिक्त मदद के बारे में समझाया गया। छह बच्चों के कानों में इंफेक्शन मिलने पर उन्हें इलाज के लिए एम्स आने की सलाह दी गई।

प्रो. नागरकर का कहना है कि कई बच्चों में जन्म से ही सुनने की क्षमता कम होती है। यदि इसे समय रहते पहचान लिया जाए तो इसका उपचार संभव है। इसके अलावा कई बच्चे या अभिभावक कान में असुरक्षित चीजों जैसे माचिस की तीली, पैन, पैंसिल आदि का भी प्रयोग करके सुनने की क्षमता को प्रभावित कर लेते हैं। इस प्रकार के जागरूकता कैंपों के कोई भी बीमारीको गंभीरता से लेकर तुरंत चिकित्सक से परामर्श लेने का सुझाव दिया।

प्रो. नागरकर ने नाक, कान या गले से संबंधित कोई भी बीमारीको गंभीरता से लेकर तुरंत चिकित्सक से परामर्श लेने का सुझाव दिया।

कार्यक्रम में पीजीआई चंडीगढ़ की वरिष्ठ ऑडियोलॉजिस्ट और स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट डॉ. अनु एन. नागरकर ने बच्चों को कान स्वच्छ रखने और बेहतर संवाद के बारे में बताया। ईएनटी विभाग की स्पीच थैरेपिस्ट मोनालीसा, स्कूल ऑफ पब्लिक हैल्थ की कृतिका वैष्णव, प्रियंका, स्नेहलता, सुमित्रा और श्रीकांत ने भाग लिया। ईएनटी विभाग के यह जागरूकता कार्यक्रम एम्स के बाल रोग विभाग और स्त्री रोग विभाग में भी आयोजित किए गए। कार्यक्रमों का समापन छह मार्च को हुआ।

*****

Spread the Word, Speak up and Stand up for Cancer Free World

- **Several Awareness Programmes on World Cancer Day in AIIMS**
- **Poster Competition and Exhibition, Skit by Students Marked the Event**

Raipur, 24 February, 2020

Radiotherapy Department and College of Nursing in All India Institute of Medical Sciences, Raipur had organized an awareness program on World Cancer Day in the Central Dome of the campus. Experts asked patients to avoid chemicals in food, use fewer pesticides in farming and eat more fruits and vegetables in the meal. Everyday yoga and exercise can enhance chances to avoid cancer.

While inaugurating Poster Competition and Exhibition under World Cancer Day programme in Central Dome, Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director, AIIMS Raipur asked doctors and nursing officers to create more awareness about cancer. 'India is witnessing growing number of cancer patients. In Patients from Chhattisgarh region and other neighboring states, AIIMS Raipur has diagnosed a large number of cancer cases last year. Cancer is becoming a killer disease. If it can be diagnosed during early stages, it can be cured. We should come forward to take this responsibility, he added.

'Under the Ayushman Bharat project of Central Government, patients can get treatment in AIIMS Raipur. Patients have to come forward for treatment, as delay in treatment can be life threatening for them. Spread the word, speak up and stand up for cancer free world', he said.

Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director, AIIMS visiting poster exhibition in AIIMS, Raipur on World Cancer Day.

Prof. Nagarkar praised the efforts by faculty members, Junior doctors, nursing officers and students in taking care of cancer patients in different departments during the treatment process. He visited the exhibition and encouraged students to create more awareness about cancer.

Nursing students displayed different posters exhibiting different types of cancer, causes and treatments available. Some Posters were based on tobacco products resulting in cancers of different body parts and also for giving strict message to give up such products.

A Skit was also played by the students which described the life of cancer patients and their fight for hopeful life. 'Cricketer Yuvraj Singh, Actress Sonali Bendre and Manisha Koirala are living examples of fight against cancer. Together with the help of family members and society, we can fight against the cancer', said the participating students. They encouraged everyone to use chemical free products, organic farming and more fruits and vegetables over fast food in the meal.

CNE on 'I am and I will' witnessed expert lectures on prevention and risk reduction, myths and misinformation, the latest technology in diagnosis and treatment of cancer, reducing the skill gap, government action and accountability. The program was attended by Dr. Karan Peepre, Medical Superintendent, Prof. S. P. Dhaneria, Dr. Siddhartha Nanda, Sharun N.V., Suman Shinde, Abdulmunaf Mujawar, Dr. Soloman James and Rajendar Singh.

******

आयुष में वर्षभर में चार गुना बढ़ गए रोगी

- आयुर्वेद से लेकर होम्योपैथी तक खूब भा रही है मरीजों को
- नेत्र कायाकल्प और कपिंग थैरेपी भी लोकप्रिय हो रही हैं
- शरीर के महत्वपूर्ण बिंदुओं के इलाज से बढ़ा रहे ऊर्जा

आयुष में कपिंग विधि से इलाज कराते रोगी।

आयुष में नेत्र कायाकल्प से नेत्रों की ज्योति बढ़वाते रोगी।

आयुष में वर्मा विधि से इलाज करवाते रोगी।

रायपुर, 09 जनवरी, 2020

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में दिसंबर के माह में 45 हजार से अधिक मरीजों ने ओपीडी में इलाज कराया। इन रोगियों में एक वर्ग ऐसा भी रहा जिसने आयुष–आयुर्वेद, योग,यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी पर विश्वास जताया। दिसंबर माह में 1821 रोगियों ने आयुष की विभिन्न ओपीडी में अपने रोगों का इलाज कराया। एक वर्ष के अंदर इसमें चार गुना बढ़ोत्तरी देखी गई जो एलोपैथी के साथ ही चिकित्सा की पारंपारिक पद्धतियों के प्रति बढ़ते विश्वास को प्रकट करता है।

एम्स में वर्ष 2019 के जनवरी माह में आयुष ब्लॉक का शुभारंभ हुआ था। इसमें आयुर्वेद,योग,यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी के विशेषज्ञ एम्स आने वाले रोगियों का उपचार पारंपारिक पद्धतियों की मदद से करते हैं। जनवरी में ओपीडी की शुरूआत के बाद पहले माह 417 रोगी आए। इसके बाद के माह में इनमें निरंतर वृद्धि देखने को मिली। जुलाई–अगस्त तक इसमें लगभग तीन गुना बढ़ोत्तरी होकर यह संख्या 1200 तक पहुंच गए। नवंबर में आयुष की विभिन्न विधाओं में 1775 रोगियों ने अपना इलाज कराया। दिसंबर माह में आने वाले 1821 रोगियों की संख्या सबसे अधिक रही जिसमें 623 रोगी होम्योपैथी और 587 रोगी आयुर्वेद के इलाज के लिए पहुंचे। योग और नेचुरोपैथी से 73 रोगियों और यूनानी से 406 रोगियों को लाभ मिला।

निदेशक प्रो. (डॉ.) नितिन एम. नागरकर ने कहा है कि आयुष में एक वर्ष के अंदर चार गुना रोगियों का बढ़ जाना अन्य पारंपारिक पद्धतियों के प्रति बढ़ते विश्वास को प्रकट करता है। उन्होंने कहा कि रोगियों को विशेषज्ञों के परामर्श के साथ ही आवश्यक दवाइयां भी यहां उपलब्ध कराई जा रही हैं जिससे उन्हें कहीं और जाने की आवश्यकता नहीं है। एम्स परिसर में बनाई गई होम्योपैथी डिसपेंसरी का लाभ बड़ी संख्या में रोगी उठा रहे हैं।

चिकित्सा अधीक्षक डॉ. करन पीपरे ने बताया कि आयुष के अंतर्गत डॉ. सुनील कुमार राय (आयुर्वेद), डॉ. विक्रम पई (योग), डॉ. अदनान मस्तान (यूनानी), डॉ. लक्ष्मण कुमार (सिद्ध) और डॉ. आशुतोष त्रिपाठी (होम्योपैथी) का इलाज उपलब्ध करा रहे हैं। बड़ी संख्या में रोगी आयुष के चिकित्सकों का लाभ उठा रहे हैं। यही कारण है कि एक वर्ष के अंदर इसमें रोगियों की संख्या चार गुना बढ़ गई है।

आयुष के अंतर्गत आयुर्वेद में नेत्र कायाकल्प, सिद्ध में वर्मा थैरेपी, यूनानी में कपिंग थैरेपी और योग में दिनचर्या में आने वाले बदलावों और तनाव को दूर करने के उपाय प्रमुख रूप से लोकप्रिय हो रहे हैं।

इन पद्धतियों की मदद से रोगियों के नेत्रों की ज्योति को बढ़ाने, शरीर के किसी खास हिस्से में लंबे समय से हो रहे दर्द को दूर करने और शरीर के महत्वपूर्ण बिंदुओं का इलाज करके पूरे शरीर में ऊर्जा के संचार को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है।

*****

Focused Approach and Continuous Training Needed in Hospital Administration

- **CME on Various Topics Pertaining to Hospital Administration**
- **RTI, Fire Safety and Bio Medical Waste Management Discussed**

Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director, AIIMS Raipur addressing CME on Hospital Administration on Saturday.

Dr. A.K. Gupta, Medical Superintendent, PGIMER, Chandigarh addressing CME on Hospital Administration.

Raipur, 08 February, 2020

Hospital Administrators from various prestigious Medical Institute around the country including newly established AIIMS deliberated upon various aspects of the Hospital Administration in All India Institute of Medical Sciences Raipur here today. Experts asked for focused approach and continuous training of personnel dealing with RTI, Contract Labour, Fire Safety and Bio Medical Waste Management in Hospital Administration.

While inaugurating a CME on 'Issues, Challenges & Possible Solutions in Hospital Administration' Chief Guest Prof. A.K. Chandrakar, Vice-Chancellor, Pt. Deendayal Upadhyay Memorial Health Sciences & Ayush University said that AIIMS has become one of the best medical institutes in Central India. Deliberations on BMW Management will lead to more awareness about the hazardous effects due to bio waste. Dr. A.K. Gupta, Medical Superintendent, PGIMER, Chandigarh asked for best output from all the stakeholders to become one of the best institutes.

Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director, AIIMS Raipur said that RTI, Bio Medical Waste, Legal aspects and Fire Safety are the topics hospital administration facing day to day basis. 'Knowledge imparted by the experts will lead to informed decisions by hospital administrators, he added. Deputy Director (Admin.) Neeresh Sharma asked officers to learn from others experiences and follow the rules in letter and spirit.

During the CME, Dr. Ranjit Pal Singh Bhogal, PGIMER, Chadigarh explained various procedural aspects of BMW Rules 2016. 'Bio medical waste has become a challenge for hospital administration. Collection, segregation, storage, transportation and disposal- all stages must be dealt carefully. We should be aware that even health camps now covered under new rules. No untreated BMW shall be kept stored beyond a period of 48 hours and it should be segregated at source in color coded containers, he added.

Dr. Raman Sharma elaborated fire safety measures and regulations in hospitals. He asked all major hospital to adopt the National Building Code, periodically inspect fire fighting equipment and to organize fire safety drills on a regular basis. Dr. Mahesh Devnani discussed various procedures in RTI act.

CME witnessed discussions on various aspects of the above topics. CME was graced by Dr. Karan Peepre, MS, AIIMS Raipur, Dr. S.P. Dhaneria, Dean, Dr. Nitin Kumar Borkar, Dr. Tridip Dutta Baruah, Dr. Ramesh Chandrakar and AIIMS Hospital Admin-istrative Officer V. Sitaramu.

*****

एम्स में जल्द उपलब्ध होगी कैंसर के लिए ब्रेकीथैरेपी

- त्वचा, होठ, आंख, सिर, गला आदि के कैंसर में काफी मददगार
- रायपुर में कैंसर का सस्ता और जल्द इलाज संभव हो सकेगा
- कंप्यूटर के अत्याधुनिक प्रोग्राम की मदद से इलाज और दवा निर्धारित होगी

रायपुर, 24 फरवरी, 2020

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान रायपुर में कैंसर के इलाज के लिए अत्याधुनिक ब्रेकीथैरेपी शुरू होने जा रही है। इसकी मदद से कई प्रकार के कैंसर के मरीजों का रायपुर में सस्ता और जल्द इलाज संभव हो सकेगा। एम्स में इस थैरेपी की उपलब्धता से उन गरीब मरीजों को काफी लाभ मिलेगा जो अभी तक इलाज के अन्य प्रदेशों में भटकते थे। कंप्यूटर प्रोग्राम की मदद से न सिर्फ इनकी इलाज की प्रक्रिया निर्धारित होगी बल्कि डोज की कितनी मात्रा चाहिए यह भी आसानी से तय किया जा सकेगा।

ब्रेक्रीथैरेपी को कैंसर के इलाज की नई तकनीक माना जाता है। यह थैरेपी प्रमुख रूप से शरीर के ऊपरी सतह पर होने वाले कैंसर के इलाज के लिए काफी उपयोगी होती है। चिकित्सा अधीक्षक डॉ. करन पीपरे के अनुसार बेक्रीथैरेपी की मदद से प्रमुख रूप से सेरेविक्स, ब्रेस्ट, त्वचा, सिर, गला, रेक्टम, आंख और अन्य

इसी प्रकार के कैंसर का आसानी के साथ इलाज किया जा सकता है।

इस प्रक्रिया में रेडियोएक्टिव सोर्स को एक खास प्रकार के मेटेलिक कैप्सूल में रखकर कैंसरग्रस्त टिश्यू के पास छोड़ दिया जाता है। इससे यह कैंसर की सेल्स को खत्म करने के साथ ही उन टिश्यू को सिकोड़ना शुरू कर देता है। इस कैप्सूल की मदद से रेडियोएक्टिव सोर्स भी एक स्थान पर बना रहता है शरीर के अन्य किसी भाग पर इसका असर नहीं पड़ता। ब्रेकीथैरेपी में कम समय और कम लागत में तेजी के साथ कैंसर का इलाज किया जा सकता है। इसके लिए कंप्यूटर प्रोग्राम की मदद ली जाती है। इस पर कार्य करने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित मेडिकल फिजिस्ट होते हैं। एम्स में इसके लिए चार मेडिकल फिजिस्ट रखे गए हैं। कैंसर मरीज के परीक्षण के बाद सभी इंडीकेटर्स को कंप्यूटर प्रोग्राम में फीड कर रोगी को दी जाने वाली थैरेपी के बारे में निर्णय लिया जाता है।

ब्रेकीथैरेपी के लिए एम्स के रेडियोथैरेपी विभाग में एक पृथक भवन का निर्माण किया जा रहा है। इसके बनते ही मरीजों का इलाज शुरू हो सकेगा। विभाग ने ब्रेकीथैरेपी से इलाज के लिए विभिन्न पैकेज बनाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। डॉ. पीपरे ने बताया कि गरीब मरीजों और बीपीएल कार्डधारकों के लिए यह लगभग मुफ्त होगी जबकि अन्य मरीजों को भी काफी कम लागत पर इसका लाभ मिल सकेगा।

एम्स के निदेशक प्रो. (डॉ.) नितिन एम. नागरकर ने कहा है कि ब्रेकीथैरेपी की मदद से कैंसर के इलाज में नई तकनीक का उपयोग काफी कारगर होगा। उन्होंने कहा कि एम्स कैंसर सहित सभी गंभीर बीमारियों के कम खर्च और कम समय में इलाज के लिए कृत संकल्पित है। ब्रेकीथैरेपी भी इसी दिशा में उठाया गया एक कदम है। शीघ्र ही कई और विभागों में नई तकनीक के उपयोग से प्रभावी इलाज संभव किया जाएगा।

*****

SNOMED is Need of Hours for Clinical Documentation and Reporting

- CME on SNOMED Clarify Many Concepts to Medical Students
- It could Save Huge amount by better Clinical Decisions

Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director, AIIMS Raipur facilitating Lt. Col. (Dr.) J.V. Ramamurthi during CME on SNOMED.

Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director, AIIMS Raipur addressing CME on SNOMED.

Raipur, 24 January, 2020

'Systematized Nomenclature of Medicine-Clinical Terms (SNOMED-CT) has become an integral part of clinical documentation and reporting. India is one of the 40 countries to adopt new system. It will help to diagnose different disease and to develop a meta data useful for further machine learning and artificial intelligence', says Lt. Col. (Dr.) J.V. Ramamurthi. Dr. Ramamurthi was addressing a CME on SNOMED in AIIMS.

'SNOMED internationally specify and distribute the reference set format, which is simple and stable while enabling innovation through adaption to cater for changing requirements. Different studies shows that documentation and reporting of different diseases and acquiring this data in digital form can save huge amount of money from better clinical decisions. It groups ideas for aggregation and analysis and adds statistical value to data', he said.

Lt. Col. (Dr.) J.V. Ramamurthi addressing CME on SNOMED in AIIMS Raipur.

He defined different approach towards choice of terminologies and provided insightful information of different approaches adopted by US and UK. 'SNOMED can quantify a large number of information available with medical practitioners. It could lead to better diagnose and treatment of disease', he added.

Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director, AIIMS Raipur highlighted the role of SNOMED. 'India has huge patient data available with doctors. The country also has one of the best IT infrastructures. SNOMED can give the best result with both of them. As new generation is more adaptive to changes, this huge cache of meta data is more useful for them', he added.

Dr. Karan Peepre, Medical Superintendent proposed vote of thanks.

Shri Neeresh Sharma, Deputy Director (Admin.) graced the occasion. The CME is attended by Senior and Junior Residents, Medical and Nursing students and faculty member of AIIMS. The CME is organized by Department of Medical Records in AIIMS.

*****

आंखों की नियमित जांच से रोक सकते हैं ग्लूकोमा का दुष्प्रभाव

- एम्स के नेत्र रोग विभाग में हर माह ग्लूकोमा से पीड़ित 150 मरीज पहुंच रहे
- बढ़ती रक्तचाप की बीमारी और मधुमेह से ग्लूकोमा की संभावना अधिक

नेत्र रोग विभाग में मनाए जा रहे ग्लूकोमा सप्ताह के अंतर्गत रोगियों की नेत्र जांच करते चिकित्सक।

नेत्र रोग विभाग में मनाए जा रहे ग्लूकोमा सप्ताह के अंतर्गत पोस्टर्स के माध्यम से जागरूकता फैलाते छात्र।

रायपुर, 13 मार्च, 2020

ग्लूकोमा (काला मोतिया) की बीमारी छत्तीसगढ़ में अभी भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। एम्स में प्रतिमाह 150 से 200 मरीज तक ग्लूकोमा से पीड़ित होने की वजह से पहुंच रहे हैं। नेत्र चिकित्सकों ने बढ़ती रक्तचाप की बीमारी और मधुमेह के प्रभाव से नेत्रों को बचाने का आह्वान किया है। साथ ही आंखों की नियमित जांच से ग्लूकोमा के दुष्प्रभाव को दूर करने की सलाह दी है।

एम्स में नेत्र रोग के विभागाध्यक्ष डॉ. सोमेन मिश्रा ने बताया कि एम्स की ओपीडी में नियमित रूप से ग्लूकोमा के रोगी पहुंच रहे हैं। प्रति सप्ताह औसतन 40 से 50 मरीज ग्लूकोमा की वजह से कम दिखने की शिकायत लेकर विभाग में आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह स्थिति रायपुर सहित छत्तीसगढ़ के सभी क्षेत्रों में देखने को मिल रही है। युवाओं की तुलना में अधिक उम्र के रोगियों में यह ज्यादा असर दिखा रही है।

ग्लूकोमा के प्रभाव से बाहरी दृष्टि में कमी आ जाती है, परिधीय दृष्टि कमजोर हो जाती हैं, लाइट के चारों तरफ इंद्रधनुष रंगों जैसा दिखाई देता है और बार–बार चश्मे का नंबर बदलता रहता है। यदि इन लक्षणों की शुरूआत में ही पहचान कर नेत्रों की नियमित जांच करवा ली जाए तो इससे ग्लूकोमा से बचा जा सकता है।

डॉ. मिश्रा का कहना है कि यदि ग्लूकोमा को नजरअंदाज किया जाए तो इससे नेत्रों में आंतरिक दबाव बढ़ जाता है जिससे नेत्रों को क्षति पहुंच सकती है और सही उपचार न होने पर अंधत्व तक की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। आंखों में किसी प्रकार की चोट, सूजन और स्टिरयॉड के अधिक प्रयोग से भी ग्लूकोमा संभव है। विभाग द्वारा इस संबंध में आठ मार्च से जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए गए जिसमें निरंतर जागरूकता पोस्टर के माध्यम से रोगियों को ग्लूकोमा के दुष्प्रभाव से बचने की सलाह दी गई। विभाग में डॉ. नीता मिश्रा, डॉ. अंकुर श्रीवास्तव सहित वरिष्ठ शिक्षक छात्रों और शिक्षकों को ग्लूकोमा की चुनौती का मुकाबला करने के लिए निरंतर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं।

ग्लूकोमा के इलाज के लिए एम्स के नेत्र विभाग में प्रत्येक प्रकार की सुविधा उपलब्ध है। प्रो. मिश्रा ने बताया कि विभाग में टोनोमेट्री, ऑप्थल्लोस्कोपी, गोनियोस्कोपी और पेरिमेट्री की अत्याधुनिक मशीनें उपलब्ध हैं। यदि नेत्र रोगी किसी भी प्रकार की शिकायत पर जांच करवा लें तो नेत्र के रोग का त्वरित निदान विभाग में संभव है।

*****

Significant Progress has been Made, Work Harder to Eliminate TB

- Zonal Task Force Workshop Inaugurates in AIIMS Raipur
- Progress of Five States has been Reviewed
- Chhattisgarh Sets Target to Eliminate TB by 2023

Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director, AIIMS Raipur felicitates Chhattisgarh Health and Family Welfare Secretary Ms. Niharika Barik Singh

Chhattisgarh Health and Family Welfare Secretary Ms. Niharika Barik Singh inaugurating Zonal Task Force Workshop

Raipur, 18 January, 2020

To review TB elimination programme performance and utilize peer learning and cross experience in TB treatment, two days Zonal Task Force Workshop of five states has been inaugurated in All India Institute of Medical Sciences Raipur. Experts said that significant progress has been made in treatment and elimination of TB. More hard work by medical professionals can achieve TB elimination from India by 2025.

While inaugurating the ZTF Workshop, Padma Shri and stalwart in implementing TB treatment protocol through public health care system in India Prof. Digambar Behera from PGI Chandigarh said that Medical Colleges have significant role in TB elimination. 'Around 24 lakh TB patients have been identified last year. Three to four lakh patients may be counted as missing cases. It is a great achievement for medical practitioners. Work a little harder and India can give final push towards TB elimination, he said.

Chhattisgarh Health and Family Welfare Secretary Niharika Barik Singh said that TB is easily curable disease but it remains a big challenge for our health system. Around 4.80 lakh patients die every year because of TB. 'Chhattisgarh Health Department has set a very ambitious target to eliminate TB by 2023. We should set year wise target to achieve overall goal. Mission mode approach is needed to achieve TB elimination, she said.

Dr. Priyanka Shukla, Director, National Health Mission has appreciated the leading role played by CG in TB elimination. She asked for constant community engagement to dig away social stigma on TB patients and more proactive role by medical colleges. 'AIIMS can be a Centre of Excellence for TB elimination. It can have its own drug resistant TB patients ward and lab. It can lead to fight against TB, she added.

Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director, AIIMS Raipur said that AIIMS is partnering with CG Health Department in fight against TB, Malaria and malnutrition. 'TB exists in humans since last several centuries. We need be Public-Private Partnership, State-Centre or Partnership among medical practitioners. Research driven approach can be crucial in eliminating TB in India, he said.

Dr. Raghuram Rao, DADG, Directorate General of Health Services in his presentation said that India has around 26.9 lakh patients (2018) which is 199 per lakh or 0.2% of total population. Nine states account 65% of total TB patients includes Assam, Bihar, Karnataka, Maharashtra, Rajasthan, Tamilnadu, Uttar Pradesh and West Bengal.

The Workshop is graced by Dr. S.L. Adile, Director, Medical Education (CG), Organizing Secretary Dr. Ajoy Kumar Behera, Neeresh Sharma, Deputy Director (Admin.), Medical Superintendent Dr. Karan Peepre and Dr. S.K. Sahi. According to Dr. Behara the Workshop reviewed the progress made by Chhattisgarh, West Bengal, Bihar, Odisha and Jharkhand in TB Elimination programme, introducing new TB diagnostics and laboratory management and injection free regimen.

*****

एम्स के चिकित्सकों ने चलाया सफाई अभियान, अब प्रत्येक शनिवार को जुटा करेंगे सभी

रायपुर, 04 जनवरी, 2019

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के चिकित्सक और कर्मचारी शनिवार को दूसरे रूप में दिखाई दिए। सभी हाथ में झाड़ू लेकर संस्थान और इसके आसपास सफाई अभियान पर निकले।प्रत्येक शनिवार को इसी प्रकार सफाई अभियान चलाकर जागरूकता फैलाई जाएगी।

एम्स में कायाकल्प योजना के अंतर्गत स्वच्छता एक्शन प्लान तैयार किया गया है। इसी प्लान के अनुरूप अब कैंपस के अंदर सघन स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। इस बारे में चिकित्सकों और कर्मचारियों

एम्स में कायाकल्प अभियान के अंतर्गत स्वच्छता एक्शन प्लान के लिए एकत्रित चिकित्सक और कर्मचारी।

को जागरूक करने के उद्देश्य से चिकित्सा अधीक्षक डॉ. करन पीपरे के निर्देशन में चिकित्सकों, नर्सिंग स्टॉफ और कर्मचारियों की एक टीम ने पूरे कैंपस में सफाई अभियान चलाया। इस अवसर पर अभियान के समन्वयक डॉ. मृत्युजंय राठौर, अधिशासी अभियंता मनोज रस्तोगी, उप–चिकित्सा अधीक्षक डॉ. नितिन कुमार बोरकर, डॉ. रमेश चंद्राकर और डॉ. त्रिदिप दत्ता बरूआ, शिव कुमार सिंह, सीनियर नर्सिंग ऑफिसर प्रिंस जोस, दिलीप, केशव वर्मा, अजय सिंह, नितिन वर्गीज, मुकेश यादव सहित बड़ी संख्या में चिकित्सकों और कर्मचारियों ने भाग लिया

*****

वसंत पंचमी पर विशेष पूजन

रायपुर, 30 जनवरी, 2020

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में गुरुवार को वैदिक रीति से मां सरस्वती का पूजन कर वसंत पंचमी मनायी गई। इस अवसर पर पुस्तक और कलम की विशेष अर्चना करते हुए सभी के ज्ञानवर्द्धन की कामना की गई।

डीन प्रो. एस.पी. धनेरिया, उप–निदेशक (प्रशासन) नीरेश शर्मा और लाइब्रेरी की चेयरपर्सन डॉ. एली महापात्रा के निर्देशन में चिकित्सकों, अधिकारियों, कर्मचारियों और छात्रों ने सेंट्रल लाइब्रेरी में आयोजित विशेष पूजन में भाग लिया। इस अवसर पर ज्ञान की देवी मां सरस्वती का वैदिक रीति से पूजन कर उनसे ज्ञान का प्रकाश फैलाने की कामना की गई। प्रो. धनेरिया ने सभी का आह्वान किया कि वे स्वयं के ज्ञान अर्जन के साथ

समाज के वंचित वर्ग तक भी ज्ञान का प्रकाश फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

कार्यक्रम में लाइब्रेरियन रश्मि शर्मा और पुष्पलता भल्ला, वित्त सलाहकार बी.के. अग्रवाल, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी पारिजात दीवान, डॉ. मृत्युजंय राठौर, उप–परीक्षा नियंत्रक मिलिंद मजूमदार सहित बड़ी संख्या में चिकित्सक, अधिकारियों और छात्रों ने भाग लिया।

*****

Harness Potential of Differently Abled, Make them Independent for Future

- CME on 'Challenges and Scope of Rehabilitation'
- Diabetic Patients are suffering Most, Need to rehabilitate them
- Avoid Architectural Barriers for PWD, Various Strategy Discussed in CME

Prof. (Dr.) Suranjan Bhattacharjee, Ex Director, CMC Hospital Vellore addressing CME

Raipur, 28 February, 2020

To rehabilitate patients who experienced physical limitations resulting from injury, disease or malformation a CME had been organized by All India Institute of Medical Sciences. Experts and luminaries in Physical Medicine and Rehabilitation from prominent medical institutions urged medical practitioners and students to harness the potential of such patients to make them independent for the rest of life.

While inaugurating the CME on 'Challenges and Scope of Rehabilitation' by Department of Physical Medicine and Rehabilitation, AIIMS Raipur Prof. (Dr.) Suranjan Bhattacharjee, Ex Director, CMC Hospital Vellore said that weakness of disabled patients can become their great strength. It is up to medical practitioner to realize their potential and harness it. 'Rehabilitation medicos can adopt an approach of questioning obvious and to look at all the available evidence for treatment. There is no substitute for compassionate service in the rehabilitation. In India, we have best brains. We should use it with newer technology. Family concept in India can also play a pivotal role in the rehabilitation of injured person, he said.

Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar, Director, AIIMS Raipur emphasized on interdisciplinary approach in rehabilitation of patients. 'AIIMS through its different departments along with PMR department is focusing not only on treatment but also on rehabilitation of most suffered patients. Medical students can adopt a bright career in the PMR, he added.

Prof. Rajendra Sharma, Head of the Department, Dr. Ram Manohar Lohia Hospital, Delhi explained diabetic foot and its orthotic management. Prof. Sharma said that annually more than one million people with diabetes suffer some amputation. India witnessed 75% leg amputation every year due to an infected neuropathic foot. 'Foot care is more important in such cases. Washing feet, drying it properly and keeping skin soft can prevent such conditions, he said.

Prof. Ajay Gupta, Safdarjung Hospital, Delhi discussed Goal Setting in Management of Spasticity. Rajesh Tiwari, Deputy Director, Ministry of Social Justice and Empowerment, Chhattisgarh said that CG has 624937 (2011) disable persons in the state.

Out of them 53.46% are male and 46.54% are female. He explained various welfare schemes initiated by the State government to rehabilitate differently able people. Dr.Joy Singh Akoijam from National Institute of Medical Sciences urged administrators to avoid architectural barriers for PWD. CME is graced by Prof. Sanjay Wadhwa, Dr. Karan Peepre, Prof. Alok Agrawal and Dr. Jaydeep Nandi.

कायाकल्प पुरस्कार का मूल्यांकन करने के लिए निरीक्षण

- केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की टीम ने विभिन्न विभागों का किया दौरा
- एक साल में आईपीडी की संख्या 11 से 19 हजार तक पहुंची

एम्स में कायाकल्प पुरस्कार के लिए आई टीम को जानकारी प्रदान करते निदेशक प्रो. (डा.) नितिन एम. नागरकर।

रायपुर, 31 जनवरी, 2020

सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों में सफाई और स्वच्छता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू किए गए कायाकल्प पुरस्कार के लिए अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान रायपुर का मूल्यांकन करने के लिए केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की टीम एम्स पहुंची। टीम ने विभिन्न विभागों का दौरा कर वहां रोगियों को दी जाने वाली सुविधाओं, साफ–सफाई का जायजा लिया। टीम ने चिकित्सकों, कर्मचारियों द्वारा अपनाई जाने वाली चिकित्सा पद्धतियों के बारे में जाना और रोगियों एवं उनके परिजनों से भी सेवाओं के बारे में फीडबैक लिया।

टीम में शामिल डॉ. एन.सी. दास, डॉ. रवि और डॉ. रविंद्र का स्वागत करते हुए निदेशक प्रो. (डॉ.) नितिन एम. नागरकर ने एम्स की स्थापना, अधोसंरचना, विभिन्न विभागों में उपलब्ध सेवाओं और संसाधनों, विभिन्न कोर्सेज, चिकित्सकों और कर्मचारियों की संख्या के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। प्रो. नागरकर ने बताया कि 2018 से 2019 के मध्य इन पेशेंट (आईपीडी) की संख्या 11 हजार से बढ़कर 19 हजार हो गई है जो एम्स के प्रति रोगियों के बढ़ते विश्वास को प्रदर्शित करता है। यहां छत्तीसगढ़ के साथ ही विभिन्न प्रदेशों के मरीज भी इलाज के लिए आ रहे हैं। उन्होंने शोध और अनुसंधान के क्षेत्र में एम्स के बढ़ते कदमों की भी जानकारी प्रदान की।

डॉ. दास ने कायाकल्प के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इसके माध्यम से सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों को सफाई और स्वच्छता के लिए प्रेरित किया जा रहा है जिससे आम लोगों की धारणा को बदला जा सके।

इसके बाद टीम ने रजिस्ट्रेशन काउंटर्स, आपात चिकित्सा, जनरल मेडिसिन, जनरल सर्जरी, स्त्री रोग, बाल रोग, हड्डी रोग, नेफ्रोलॉजी सहित कई विभागों का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने चिकित्सकों से विभाग में उपलब्ध सुविधाओं के बारे में जाना। नर्सिंग स्टॉफ द्वारा अपनाई जाने वाली चिकित्सा पद्धति, साफ–सफाई, पीने के पानी की व्यवस्था, आग बुझाने के संयंत्रों, सुझाव पेटिका सहित कई बिंदुओं के बारे में जानकारी एकत्रित की। इस दौरान टीम ने रोगियों और उनके संबंधियों से भी फीडबैक लिया।

इस अवसर पर चिकित्सा अधीक्षक डॉ. करन पीपरे, उप–निदेशक (प्रशासन) नीरेश शर्मा, कायाकल्प के नोडल अधिकारी डॉ. मृत्युजंय राठौर, उप–चिकित्सा अधीक्षक डॉ. नितिन कुमार बोरकर और डॉ. रमेश चंद्राकर, अधिशासी अभियंता मनोज रस्तोगी, प्रशासनिक अधिकारी वी. सीतारामू सहित बड़ी संख्या में चिकित्सक और अधिकारी उपस्थित थे।

*****

Coronavirus Screening and Counseling Facilities at AYUSH building

- AIIMS advised patients to avoid OPD services, if not necessary
- Only one family member will be allowed with Patient in Campus

Raipur, 21 March, 2020

All India Institute of Medical Sciences has started screening and counseling facilities at AYUSH building On the other hand, one coronavirus positive case admitted in AIIMS is stable and under observation of expert team. Her father and another employee's test are negative.

Screening and Counseling Facility for corornavirus suspected patients at AYUSH building has been started in AIIMS Raipur.

AIIMS has started dedicated facilities for coronavirus patients. Now, patients can come from gate no. one and move to AYUSH building. AIIMS has put up awareness material from gate to AYUSH building. Suspected patients can contact Help Desk at AYUSH building. Facilities such as screening, counseling and testing have been provided in the same premise.According to Health Bulletin issued by AIIMS, coronavirus positive case has been in stable condition in the third consecutive day. Her father also found negative in coronavirus test. Another employee with close proximity with the family was also found negative in test. Remaining reports will be received on Sunday.

Deputy Director (Admin.) Neeresh Sharma has suggested patients coming for treatment in AIIMS OPD to avoid it if not necessary. 'If possible, patients can go to primary health centers for treatment. If they do come, they will be allowed only with one family member in the campus', he added.

******

OPD Touched 3000+ Patients, Highest So Far

- **Orthopedics witnessed 262, Medicine 253 Patients**

Raipur, 17 March, 2020

OPD in All India Institute of Medical Sciences had touched 3039 patients figure on 16 March. It is highest since AIIMS established in Raipur. Orthopedics witnessed highest number-262 patients and General Medicine stood second with 253 patients in a single day. Total 1564 male and 1475 female patients got treatment at AIIMS.

Usually AIIMS OPD witnessed high foot falls during Monday and Tuesday. But this week Monday and Tuesday have witnessed much more patients. According to the data available with AIIMS management, 145 patients visited Dermatology, 171 ENT, 251 Gynecology, 200 Ophthalmology and 160 Pediatrics, 161 Pulmonary Medicine and TB on Monday. 179 patients were attended at Trauma and Emergency.

Despite the large number of patients, employees and doctors have managed to provide OPD card, treatment and medicines to all of them. No one was returned without treatment. Some doctors were seen at OPD even after official timings.

In January and February average OPD attendance was around 1700+.

Director Prof. (Dr.) Nitin M. Nagarkar said that growing number of patients at AIIMS shows more confidence in our services. 'We are committed to provide best healthcare facilities at AIIMS with minimum cost. Patient satisfaction is our prime objective and we will continue to excel in every field of medical science', he added.

******

स्वास्थ्य मंत्री ने किया एम्स का दौरा
कोविड-19, वार्ड की तैयारियों का लिया जायजा

- तैयारियों पर संतुष्टि व्यक्त की, विकास परियोजनाओं के बारे में भी जाना
- विभिन्न वार्डों में मरीजों और उनके परिजनों से की बात, हर संभव मदद का आश्वासन

एम्स में कोरोना वायरस की तैयारियों का जायजा लेने के लिए वार्ड का दौरा करते प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री टी.एस. सिंहदेव।

रायपुर, 04 मार्च, 2020

छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मंत्री टी.एस. सिंहदेव ने बुधवार को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान का दौरा कर यहां कोरोना वायरस और स्वाइन फ्लू को लेकर की गई तैयारियों का जायजा लिया। श्री सिंहदेव ने एम्स में की गई व्यवस्थाओं पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ कोरोना वायरस और स्वाइन फ्लू से मुकाबले के लिए पूरी तरह से तैयार है।

एम्स द्वारा बनाए गए आइसोलेशन वार्ड का दौरा करने के बाद श्री सिंहदेव ने एम्स के निदेशक प्रो. (डॉ.) नितिन एम. नागरकर और कोरोना वायरस के लिए तैनात किए गए वरिष्ठ चिकित्सकों से तैयारियों पर विस्तार से चर्चा की। प्रो. नागरकर ने उन्हें बताया कि एम्स में कोराना और स्वाइन फ्लू को लेकर पूरी तरह से तैयारियां कर ली गई हैं। आइसोलेशन वार्ड बनाकर जनरल मेडिसिन और पल्मोनरी एवं टीबी विभाग के वरिष्ठ चिकित्सकों को तैनात कर दिया गया है। चिकित्सकों और नर्सिंग स्टॉफ से लेकर तकनीकी कर्मचारियों को इन दोनों वायरस के इलाज के लिए बनाए गए प्रोटोकॉल के बारे में पूरी तरह से प्रशिक्षित कर दिया गया है।

इसके साथ ही एम्स में इन दोनों वायरस के लिए पर्याप्त दवाइयों, मास्क, गल्वज, बैड आदि का इंतजाम भी पूरी तरह से कर दिया गया है। मरीज के चिह्नित होने के तुरंत बाद उसका निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुसार इलाज प्रारंभ कर दिया जाएगा। श्री सिंहदेव ने विभिन्न वार्डों में रोगियों और उनके परिजनों से भी बात की। उन्होंने प्रो. नागरकर से एम्स की विस्तार योजनाओं, रेलवे लाइन से जुड़े गेट को खोलने की योजना और आयुष के बारे में विस्तार से जानकारी ली। मीडियाकर्मियों से बातचीत में श्री सिंहदेव का कहना था कि एम्स छत्तीसगढ़ के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा संस्थानों में से है और यहां सभी प्रकार की बीमारियों के लिए पर्याप्त व्यवस्थाएं हैं।

श्री सिंहदेव ने कहा है कि प्रदेशवासियों को किसी भी प्रकार से घबराने की आवश्यकता नहीं है। स्वास्थ्य विभाग और एम्स सभी प्रकार की चुनौतियों के लिए पूरी तरह से तैयार है। प्रो. नागरकर ने कहा है कि कोरोना वायरस और स्वाइन फ्लू को लेकर पूरी तरह से सावधानी अपनाने की आवश्यकता है। इस प्रकार के लक्षण मिलने पर उसे तुरंत स्थानीय अस्पताल या एम्स में इलाज के लिए लाया जा सकता है। इससे किसी प्रकार की घबराहट की आवश्यकता नहीं है। इन बीमारियों का त्वरित इलाज छत्तीसगढ़ में उपलब्ध है।

प्रो. नागरकर ने बताया कि एम्स में फिलहाल कोरोना वायरस और स्वाइन फ्लू के लिए छह बिस्तर का आइसोलेशन वार्ड बनाया गया है जिसे बढ़ाकर 12 बिस्तर का किया जा सकता है। इसके साथ ही अन्य वायरल बीमारियों के लिए इस वार्ड को स्थायी रूप से रिजर्व किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि वायरस संबंधी बीमारियों के लिए एम्स और इसके चिकित्सक पूरी तरह से तैयार हैं।

स्वाइन फ्लू का केस

एम्स में स्वाइन फ्लू का अब तक एक केस सामने आया है। पल्मोनरी विभागाध्यक्ष प्रो. अजॉय कुमार बेहरा ने बताया कि जांच में एक 68 वर्षीय महिला मरीज को स्वाइन फ्लू की पुष्टि हुई है। इसी मरीज के एक अन्य रिश्तेदार को भी जो आंध्र प्रदेश में है, स्वाइन फ्लू की जांच करने के लिए कहा गया था। जांच रिपोर्ट में पाया गया कि उन्हें भी स्वाइन फ्लू है। यह मरीज गूंटूर, आंध्र प्रदेश के हैं। इस प्रकार एम्स में स्वाइन फ्लू का पहला मामला सामने आया है हालांकि यह मूल रूप से आंध्र प्रदेश का है छत्तीसगढ़ का कोई भी मामला सामने नहीं आया है।

एम्स के दो चिकित्सकों को मास्टर ट्रेनिंग

कोरोना वायरस के लिए चिकित्सकों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए केंद्र सरकार छह मार्च को दिल्ली में कार्यक्रम आयोजित कर रही है। इसके लिए एम्स से प्रो. अजॉय कुमार बेहरा और डॉ. अनुदिता भार्गव को नामित किया गया है। इन दोनों को मास्टर ट्रेनर की ट्रेनिंग दी जाएगी। इसके बाद ये दोनों वरिष्ठ चिकित्सक एम्स के अन्य चिकित्सकों और तकनीकी कर्मचारियों को वायरस की चुनौतियों से जूझने के लिए तैयार करेंगे।

******